International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

हिंदी ललित निबंध साहित्य और पर्यावरण नव संकल्पनाएं

(डॉ श्रीराम परिहार के ललित साहित्य के संदर्भ में)

प्रो. डॉ. जितेंद्र पि. पाटिल

हिंदी विभाग, संगमनेर नगरपालिका कला,दा.ज. मालपाणी वाणिज्य, आणि ब.ना. सारडा विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त)
संगमनेर, ता. संगमनेर, जिल्हा - अहिल्यानगर.

Corresponding Author – प्रो. डॉ. जितेंद्र पि. पाटिल

DOI - 10.5281/zenodo.20489015

आधुनिक हिंदी अनुसंधान अब पारंपारिक साहित्यिक समीक्षा से विकसित और आधुनिक होकर बहुआयामी और आधुनिक तकनीकी केंद्रित हो रहा है । हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में साहित्य,लोकसाहित्य,विविध विमर्श, पर्यावरणीय चिंतन सांस्कृतिक और सामाजिक अध्ययन के दायरे में नव संकल्पनाओं के आधार पर गती से विकसित हो रहे है । यह नव संकल्पनाएं आज के साहित्य, लोकसाहित्य पर्यावरणीय अध्ययन,संस्कृति,मीडिया,भाषा को आधुनिक तकनीकी के केंद्र मे रखती है । यह आज के बदलती शोध की नव संकल्पनाएं ,नई सोच , नई दृष्टि को विकसित कर रही है ।

हिंदी ललित निबंध साहित्य समाज,संस्कृती, साहित्य,धर्म,इतिहास,सभ्यता के साथ - साथ पर्यावरण संबंधी आधुनिक चिंतन को सशक्तता से अभिव्यक्त कर रहा है । आज के नए साहित्यकार अपने ललित साहित्य के द्वारा विश्वभर में विचारों को और साहित्यकारों की चिंता का मुख्य विषय बने हुए पर्यावरण पर आधुनिक सोच और शोध के आधार पर नव संकल्पनाएं अपने साहित्य के द्वारा प्रस्तुत कर रहे है । भारतीय समाज कुछ वर्ष पहले वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास को मानव जाति की सहज और स्वाभाविक उपलब्धि मानकर चल रहा था । लेकिन आज यही औद्योगिक और वैज्ञानिक विकास पर्यावरणीय चिंता का प्रमुख कारण बनता जा रहा है । परिणाम स्वरूप विकासशील देशों में आज गरिबी,बढती आबादी की समस्या से आगे बढकर पर्यावरणीय समस्या प्रमुख चिंताजनक समस्या बन गई है । इस पर्यावरणीय समस्या की और लोगों का ध्यान आकर्षित कर उन्हें उस पर्यावरणीय नवसंकल्पनाओं से जागृत करना ही डॉ. परिहार के ललित निबंध साहित्य का प्रधान उद्देश है । डॉ.श्रीराम परिहार के ललित निबंध आधुनिक युग की पर्यावरण प्रदूषण,पर्यावरणीय चिंता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कर हमें सोचने पर बाध्य करते है । डॉ परिहार का मानना है कि "आज का समाज और व्यक्ती स्वान्त सुखाय और अपने वर्चस्व की होडा - होडी में विनाश की और अग्रसर हो रहा है । हमें आज थोडीसी धरती और थोडासा आकाश बचाने की आवश्यकता है ।"1

भारतीय संस्कृती में नदी, नारी को महान माना गया है । लेकिन आज विकास की अंधी दौड में नदियों का जल प्रदूषण गहरी चिंता का विषय होता जा रहा है । आज अमरिका, इजरायल,इराण युद्ध की पार्श्वभूमी शश्य शामल धरती पर बडे - बडे विनाशकारी अश्र- शस्त्र, अणुबॉम्ब जैसे विनाशकारी अस्त्र विनाश फैला रहे हैं । मानव निर्मित

सैकडों यान,ग्रह,उपग्रह धुएं की उल्टी कर रहे हैं । इससे किसका विकास होगा यह तो आधुनिक पतन और मानव सभ्यता के विनाश की चिंता का विषय है । यह पर्यावरणीय आधुनिक विनाश है । इस धरती के विनाश पर चिंता जताते हुए श्रीराम परिहार लिखते हैं कि - *"आज सौंधी गंध वाली भूमी बचाने की आवश्यकता है । आधुनिक पर्यावरणीय नव संकल्पनाओं में जब धरती,जल,आकाश बचेगा तो ही इन्सान का बचना संभव है । नहीं तो विनाश अटल है ।"*2 डॉ श्रीराम परिहार के ललित निबंध पर्यावरण प्रदूषण एवं पर्यावरण संवर्धन पर चिंतन व्यक्त करते है । आज मनुष्य भौतिकतावादी युग में मनुष्य अधिक उपभोगवादी बन गया है । वह प्रकृति के संसाधनों का भरपूर मात्रा में उपभोग कर रहा है। धरती की छाती फोडकर वह वह अपना स्वार्थ साधना चाहता है । इस कारण आज हवा प्रदूषित है, जल प्रदूषित है, प्रकृति का संतुलन बिगड रहा है । डॉ परिहार लिखते हैं - *"अंकुर कुचले जाते है, फसले रौंदी जाती है । पेडों की शाखे काटी जाती है। खेत बदरंग हो जाते है ।"* 3

डॉ. श्रीराम परिहार पर्यावरण संवर्धन पर नई दृष्टि प्रदान करनेवाले साहित्यकार है । मनुष्य आज प्रगति उडान भर रहा है । मनुष्य आज विकास की होडा-होडी में हर बात को बुद्धि की कसोटी पर कस रहा है । मानवी बुद्धि के द्वारा नये नये अविष्कार किये जा रहे है । फलस्वरुप हृदय का देश पीछे छूट रहा है । और मस्तिष्क की विजय हो रही है । इस संदर्भ में डॉ श्रीराम परिहार चिंता व्यक्त करते हुए लिखते हैं - " अखिल ब्रह्मांड मे आकाश की छायी निरभ्रता के बीच मानव निर्मित सैकडों यान,ग्रह,उपग्रह धुएँ की उल्टी कर रहे है । शुभ्र आकाश कालिक से धुवा-धुवा हो रहा है । मनुष्य,पक्षी सांस कैसे ले ? पेड प्राणवायू कहा से प्राप्त करे ? इस प्रकार की चिंताएं मनुष्य एवं समाज को सता रही है । ऐसे समय में पर्यावरणीय प्रदूषण से जागृत होकर हमें अपने ही हाथों से मुट्ठीभर शांत और नीला आकाश बचाने की आवश्यकता है ।"* 4

आज पर्यावरणीय प्रदूषण के विविध मार्ग देखते हुए डॉ श्रीराम परिहार पर्यावरणीय चिंतन पर विविध दृष्टि से सोचते है । आज नदी नालों के प्रदूषण को देखकर वे हताश निराश होकर अपने ललित निबंध में लिखते हैं - *"एक वनमानुष आकर नदी जलों में मलमूत्र कर रहा है । नदी जलों में कारखानों का नरक घोल रहा है । नदी जलों को बांध रहा है । अब हमें पर्यावरणीय नये आयामों से जागृत होकर हमें बचाना होगा झारी भर निर्मल नीर । गागर भर जल । घुंटभर पानी ।"* 5 डॉ श्रीराम परिहार का मत हैं कि आज का मनुष्य सत्यनाशी है । उसने पंचतत्त्वों को भी धन से तोलना आरंभ कर दिया है । उसे बौद्धिक अपच और स्वार्थी धनलिप्सा ने बावरा बना दिया है । मनुष्य की स्वार्थपरखता पर करारा प्रहार करते डॉ श्रीराम परिहार लिखते हैं - *"मनुष्य ने खरीदा हुआ पानी , खरीदी हुई संस्कृति से जीवन न तो चलता है और न ही संवरता है । .... पानी बेचकर क्या मनुष्य अपना जीवन बचा सकेगा ?"* 6 डॉ श्रीराम परिहार के ललित साहित्य में पर्यावरणीय नव संकल्पनाएं ,पर्यावरण संवर्धन से संबंधित चिंतन पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के उपाय प्राप्त होते है ।

संदर्भ सूचि:

1. आंच अलाव की - डॉ श्रीराम परिहार, पंकज प्रकाशन , नेहरू नगर भोपाल, पृष्ठ क्रमांक 29
2. हंसा कहो पुरातन बात - डॉ श्रीराम परिहार, आलेख प्रकाशन, नवीन शाहदरा दिल्ली , पृष्ठ क्रमांक 30.
3. हंसा कहो पुरातन बात - डॉ श्रीराम परिहार ,आलेख प्रकाशन, नवीन शाहदरा दिल्ली ,पृष्ठ क्रमांक 31,32

4. हंसा कहो पुरातन बात - डॉ श्रीराम परिहार , आलेख प्रकाशन, नवीन शाहदरा दिल्ली , पृष्ठ क्रमांक 88
5. बजे तो वंशी गुंजे तो शंख - डॉ श्रीराम परिहार , रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा मध्य प्रदेश , पृष्ठ क्रमांक 17,18
6. धूप का अवसाद - डॉ श्रीराम परिहार, आस्था प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 96.